

फूलों का रस चूसने के चमगादड़ों के तरीके



आम तौर पर चमगादड़ काफी बदनाम हैं। खास तौर से वैम्यायर चमगादड़ों की कल्पना करके ड्राकुला फिल्मों ने इन्हें काफी बदनाम किया है मगर हकीकत यह है कि चमगादड़ों का एक बड़ा समूह फूलों का रस चूसकर जीवित रहता है। और तो और, फूलों का रस (मकरंद) प्राप्त करने के लिए कई चमगादड़ों ने विशिष्ट रणनीतियां भी विकसित की हैं।

जैसे एक चमगादड़ है ग्लॉसोफैगा सोरिसिना (*Glossophaga soricina*)। जब ब्राउन युनिवर्सिटी ऑफ प्रॉविडेंस के कैली हार्पर और उनके साथियों ने इसकी तेज़ गति पर फिल्म बनाई तो आश्चर्यचकित रह गए। यह तो पहले से पता था कि इसकी जीभ पर बहुत सारे रोम होते हैं मगर ऐसा माना जाता था कि ये निष्क्रिय पड़े रहते हैं और मात्र जीभ की सतह का क्षेत्रफल बढ़ाने में मददगार होते हैं। जब फिल्म देखी गई तो पता चला कि ये रोम निष्क्रिय नहीं बल्कि अति सक्रिय होते हैं। जब चमगादड़ अपनी जीभ बाहर निकालता है तो इन रोमों में खून भर जाता है और ये खड़े हो जाते हैं। इसके चलते जीभ के किनारे की प्रभावी लंबाई 50 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

इन रोमों के खड़े होने का एक असर यह होता है कि इनके बीच बहुत संकरी-संकरी जगहें बन जाती हैं। फूलों का रस रोमों के बीच बनी इस जगह में फंस जाता है - ये



ग्लॉसोफैगा सोरिसिना
और उसकी रोमिल जीभ

एक तरह की स्ट्रों का काम करती हैं या शायद चॉपस्टिक कहना बेहतर होगा। यानी ये चमगादड़ ज़्यादा मकरंद चूस पाते हैं।

इसी प्रकार का एक उदाहरण इक्वेडोर के चमगादड़ एनूरा फिस्टुलेटा (*Anoura fistulata*) का भी है। इसकी जीभ बहुत लंबी होती है - शरीर की लंबाई से करीब डेढ़ गुना ज़्यादा लंबी। यह स्तनधारियों में सबसे लंबी जीभ है। ऐसी लंबी जीभ का फायदा यह होता है कि एनूरा फिस्टुलेटा उन फूलों का रस आसानी से चूस लेता है जिनकी रचना नलिकाकार होती है।

जी. सोरिसिना की जीभ की लंबाई और खुरदरेपन में परिवर्तन की रफ्तार को देखते हुए शोधकर्ताओं का मत है कि इसके आधार पर नई टेक्नॉलॉजी विकसित हो सकती है। जैसे इसकी मदद से सर्जिकल रोबोट्स की कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है। (**स्रोत फीचर्स**)